पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय 15

सावित्री कुंडलिनी एवं तंत्र

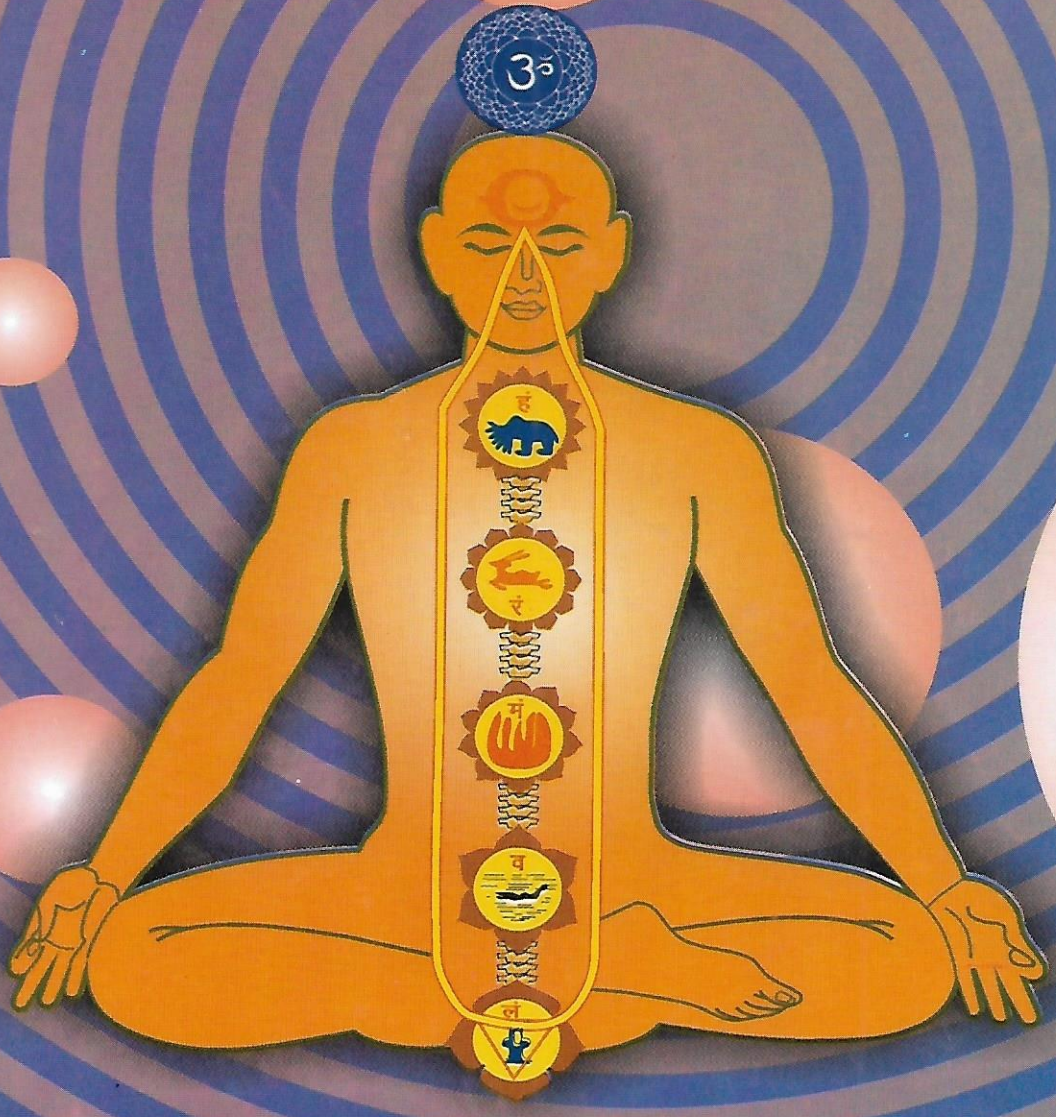

University Department of Yoga RU
No/PGDY/...525...
* Library *

अनुक्रमणिका

[illegible]	पृष्ठ
अध्याय-१	
[illegible]—एक ही महाशक्ति के दो रूप	**१.१**
[illegible] की एकता और पृथकता	१.४
[illegible] अनेकानेक धाराएँ	१.७
[illegible] की एकरूपता	१.९
[illegible]-सावित्री	१.११
[illegible]	१.१४
[illegible]	१.१६
[illegible] और कुंडलिनी महाशक्ति	१.१९
[illegible]—गायत्री की उच्चस्तरीय [illegible]	१.२३
[illegible] शक्तियों का उद्गम—गायत्री [illegible]	१.२६
[illegible] शक्तिकोश	१.२७
[illegible] महाविधाएँ	१.२८
[illegible] शक्तियाँ	१.२८
[illegible]	१.२९
अध्याय-२	
[illegible]—सविता देवता	**२.१**
[illegible] का संबंध	२.१
[illegible] का महाप्राण सविता	२.४
[illegible] एवं आत्मा	२.८
[illegible] का विवेचन	२.११
[illegible] स्रोत—सविता	२.१६
[illegible] आराधना	२.२०
[illegible] ही नहीं [illegible]	२.२४
[illegible] ज्ञान और शक्ति	२.२६
[illegible]—सविता देवता	२.२८
[illegible] है सद्बुद्धि	२.३१
[illegible] धारण करे	२.३२
[illegible]-प्रकाश की अनुकृति	२.३४
अध्याय-३	
[illegible]	**३.१**
[illegible] की अभ्यर्थना	३.१
[illegible] का अमृत पिएँ	३.५

विषय	पृष्ठ
सूर्योपासना की सार्वभौमिकता	३.८
प्राण: प्रजानां उदयत्येष सूर्य:	३.१०
विराट प्राण पुरुष : सविता देवता	३.१२
सविता का अनुदान प्राणशक्ति के रूप में	३.१५
सविता की उपासना हर दृष्टि से विज्ञानसम्मत	३.१७
सूर्योपासना कब और कैसे ?	३.१९
नवयुग का उपास्य—सविता देवता	३.२१
सविता के रूप में इष्ट का निर्धारण	३.२२
सूर्यशक्ति बनाम सूर्य पूजा	३.२३
सूर्यग्रहण : किंवदंतियाँ एवं साधनात्मक मर्म	३.२५
सूर्य-चंद्रग्रहण और उनमें सन्निहित तथ्य	३.२७
सूर्य और पृथ्वी परमात्मा और आत्मा आदर्श पति-पत्नी	३.२९
दिव्य लोकों से बरसने वाला शक्ति-प्रवाह	३.३२
समष्टि से प्रभावित व्यष्टि के क्रियाकलाप	३.३४
सौर ज्वालाओं से प्रभावित ब्रह्मांडीय चेतना	३.३७
सौर स्फोट और उनका धरती पर प्रभाव	३.४१
भूगोल बदल रहा है तो इतिहास भी बदलेगा	३.४६
सविता देवता की समर्थ साधना	३.४८
गायत्री उपासना के साथ सविता की आराधना	३.५४
प्रकाश-रश्मियों की विज्ञानसम्मत ध्यान-प्रक्रिया	३.५८
सविता—साधना से अंत:शक्ति का अभिवर्द्धन	३.६०
ध्यान-साधना से शक्तियों का विकास	३.६२
सविता और संसारव्यापी परिवर्तन-प्रक्रिया	३.६५
अगली शताब्दी का अधिष्ठाता—सूर्य	३.६९
सावित्री-साधना का स्वरूप एवं उससे जुड़ी मर्यादाएँ	३.७१
सावित्री-साधना और पंचकोश	३.७४
अध्याय-४	
आध्यात्मिक काम विज्ञान	**४.१**
सृष्टि में संचरण और उल्लास की प्रवृत्ति	४.५
कामक्रीड़ा की उपयोगिता ही नहीं, विभीषिका का भी ध्यान रहे	४.८
प्रकृति की प्रेरणा सदाचार भरी आत्मीयता	४.११
नर-नारी का मिलन	४.१४
काम को मरण मात्र नहीं, अमृत बनाएँ	४.१७

विषय	पृष्ठ
काम-प्रवृत्तियों का नियंत्रण परिष्कृत अंत:चेतना से	४.२१
काम-बीज का परिष्कार	४.२३
सृजनशक्ति का प्रेरणास्रोत—काम	४.२५
काम विज्ञान का आध्यात्मिक स्वरूप	४.३०
कामोल्लास की सृजनात्मक शक्ति	४.३३
हेय और ग्राह्य 'काम'	४.३५
काम-वासना का दुरुपयोग और सदुपयोग	४.३६
कामतत्त्व की विकृति एवं परिष्कृति	४.३९
कामुकता का भ्रम-जंजाल	४.४२
कामुकता का आवेश-उन्माद	४.४४
वासना के ताप में विगलित व्यक्तित्व	४.४५
कामक्षरण को रोकें, उसे सही दिशा दें	४.४७
मनोनिग्रह और कामुकता का निराकरण	४.४९
उत्तेजित काम-क्रीड़ा से प्राणशक्ति का क्षरण	४.५१
ब्रह्मचर्य पालें-ओजस्, मनस् और तेजस् बढ़ाएँ	४.५३
ब्रह्मचर्य की सही परिभाषा	४.५५
ब्रह्मचर्य द्वारा आत्मबल का संचय	४.५६
ब्रह्मचर्य एक तप है	४.५९
सुख चाहें तो ब्रह्मचर्य व्रत धारण करें	४.५९
अध्याय-५	
कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी संसिद्धि	५.१
आत्मविज्ञान की साधना का गुह्य तत्त्वज्ञान	५.१
मानवीय काया एक सशक्त सौरमंडल	५.३
सप्त आयामीय चेतन सत्ता	५.५
काय-कलेवर में विद्यमान ऋषि-तपस्वी, देवता और तीर्थ	५.११
कुंडलिनी के पाँच मुख-पाँच शक्ति प्रवाह	५.१७
कुंडलिनी के वशीभूत ब्राह्मीचेतना के क्रियाकलाप	५.२०
कुंडलिनी महाशक्ति का स्वरूप और आधार	५.२३
आद्य शंकराचार्य के कुंडलिनी अनुभव	५.३०
चेतना की प्रचंड ज्योति-ज्वाला कुंडलिनी	५.४३
कुंडलिनी महाशक्ति की पौराणिक व्याख्या	५.४९
महासर्पिणी कुंडलिनी और उसका महासर्प	५.५५
सुप्त सर्पिणी और उसका जागरण	५.५८
शरीरगत प्रचंड शक्ति-स्रोत—कुंडलिनी	५.६१
दिव्यशक्ति का निर्झर कुंडलिनी का चक्र-परिवार	५.६३
कुंडलिनी महाशक्ति और प्राण-प्रवाह	५.६५
कुल कुंडलिनी देवि, कंदमूल निवासिनी	५.७०
कुंडलिनी—एक प्रचंड प्राण-ऊर्जा	५.७४
कुंडलिनी का निवास, स्वरूप और प्रतिफल	५.८४
कुंडलिनी महाशक्ति का साक्षात्कार	५.८७
अध्याय-६	
षट्चक्रों का स्वरूप और रहस्य	६.१
शक्तिकेंद्रों का जागरण—ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन	६.१
षट्चक्र प्रचंड प्रवाहों के उद्गम	६.७
षट्चक्रों की पिटारी में कैद चेतना का महासागर	६.९
चक्र संस्थान और उसकी सिद्धि-सामर्थ्य	६.११
षट्चक्र ब्रह्मांडव्यापी शक्तियों के रेडियो केंद्र	६.१७
कुंडलिनी के षट्चक्र और उनका वेधन	६.१९
शरीर सात लोकों की शोभानगरी	६.२४
ध्रुव-प्रभा द्वारा देवयान-मार्ग और स्वर्गारोहण की पुष्टि	६.२७
देवयान मार्ग-सुषुम्ना की महिमा-महत्ता	६.२९
मानवीय सत्ता के दो ध्रुव प्रदेश-मूलाधार, सहस्रार	६.३२
प्रचंड ऊर्जा के दो प्रवाह कुंडलिनी में	६.४०
दिव्य शक्तियों का केंद्र सहस्रार एवं ब्रह्मरंध्र	६.४१
मानवीय सत्ता का दक्षिणी ध्रुव मूलाधार	६.४९
काम की उत्पत्ति-उद्भव	६.५३
दिव्य शक्तियों की गंगोत्तरी—नाभिचक्र	६.५८
रहस्यमयी उपत्यिकाओं का पर्यवेक्षण	६.६४
अध्याय-७	
कुंडलिनी जागरण की ध्यान-साधनाएँ	७.१
कुंडलिनी-साधना—स्वरूप और उद्देश्य	७.१
कुंडलिनी-साधना की पृष्ठभूमि	७.५
कुंडलिनी जागरण की पूर्व तैयारी	७.७
दिव्य अग्नि का अभिवर्द्धन-उन्नयन	७.९
नाड़ी संस्थान का शोधन और उसकी सामर्थ्य	७.१२
कुंडलिनी का प्राणयोग सूर्यवेधन प्राणायाम	७.१५
कुंडलिनी जागरण एवं नाद-साधना	७.२१
षट्चक्रों का वेधन	७.२३
मूलाधार चक्र	७.२५
स्वाधिष्ठान चक्र	७.२५
मणिपूर चक्र	७.२५
अनाहत चक्र	७.२५
विशुद्धाख्य चक्र	७.२५
आज्ञा चक्र	७.२५
शून्य चक्र	७.२५
चक्रों का वेधन	७.२५

कुंडलिनी जागरण की ध्यान-धारणा ७.२७
ध्यान भूमिका में प्रवेश ७.२७
विशिष्ट ध्यान प्रयोग ७.२८
१. ध्यान भूमिका में प्रवेश ७.२८
२. (क) कुंडलिनी के पाँच नाम पाँच स्तर ७.३२
२. (ख) कुंडलिनी ध्यान-धारणा का प्रथम चरण—मंथन ७.३५
२. (ग) दूसरा चरण—जाग्रत जीवनज्योति का ऊर्ध्वगमन ७.३६
२. (घ) तीसरा चरण—चक्र-शृंखला का वेधन-जागरण ७.३८
२. (ङ) चौथा चरण—आत्मीयता का विस्तार, आत्मिक प्रगति का आधार ७.४०
२. (च) अंतिम चरण—परिवर्तन ७.४१
३. (क,ख) समापन शांतिपाठ ७.४३
कुंडलिनी जागरण से आत्मिक और भौतिक सिद्धियाँ ७.४३
कुंडलिनी जागरण से व्यक्तित्व में क्रांति ७.४६
कुंडलिनी-साधना क्यों ? किस प्रयोजन के लिए ? ७.४९
नवसृजन के निमित्त साधना-पराक्रम ७.५२
राष्ट्र कुंडलिनी की परिवर्तन-प्रक्रिया ७.५५
कुंडलिनी-साधना का मर्म एवं आवश्यक मार्गदर्शन ७.५७

अध्याय-८

सावित्री विज्ञान और तंत्र-साधना ८.१
सावित्री द्वारा वाममार्गी तांत्रिक साधनाएँ ८.२
तांत्रिक साधनाएँ गोपनीय हैं ८.३
दक्षिणमार्गी साधना ही श्रेयस्कर ८.७
तंत्रविद्या की उपयोगिता ८.१०
तंत्रशास्त्र उपयोगी भी, विज्ञानसम्मत भी ८.१२
तंत्र अध्यात्म-क्षेत्र का भौतिक विज्ञान ८.१५
'तंत्र विज्ञान' अलौकिक क्षमताओं से भरी-पूरी विद्या ८.१७
योग विज्ञान एवं तंत्रशास्त्र एक ही वृक्ष की दो शाखाएँ ८.१८
योग और तंत्र की पृष्ठभूमि ८.२०
कुंडलिनी योग का स्वरूप और प्रयोग ८.२१
योग का वामाचारी प्रयोग रोका जाए ८.२७
वाममार्गी साधनाओं में पंचमकार-रहस्य ८.२८
तंत्रशास्त्र में मुद्राओं का महत्त्व ८.३७
यंत्रों का रहस्यमय विज्ञान ८.३८
तंत्र द्वारा शक्तियों का आदान-प्रदान ८.४१

❑❑❑

अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा

VS 15

₹ 150/-